Received: Nov '23
Revised:
Accepted: Dec '23

© 2024 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

WOMEN'S DISCUSSION IN DAYA PRAKASH SINHA'S PLAYS
दयाप्रकाश सिन्हा जी के नाटकों में स्त्री–विमर्श

डॉ. अतुल कुमार गौतम
शिक्षाविद्

प्रस्तावना :–

हिन्दी साहित्य में 'स्त्री–विमर्श' को स्त्री–चेतना, स्त्री–सशक्तिकरण, स्त्री–अस्मिता (अस्तित्व), स्त्री–मुक्ति एवं नारीवाद आदि अनेक नामों से जाना जाता हैं। नारीवाद के लिए अंग्रेजी में Feminism शब्द का प्रयोग किया जाता है। नारियों को भी पुरुषों के समकक्ष सामाजिक, राजनीतिक एवं शैक्षिक स्वतंत्रता–समानता के आंदोलन को नारीवाद के नाम से जाना गया। इसलिए स्त्री–विमर्श के लिए 'नारीवाद' नाम ही उपर्युक्त होगा। सामान्य भाषा में ऐसा साहित्य जिसमें नारी जीवन की अनेक समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया गया हो, उसे स्त्री–विमर्श कहा जाता है। स्त्री–पुरुष को एक दूसरे के समकक्ष माना जाता है फिर भी पुरुष समाज के द्वारा स्त्री समाज को समानता के अधिकारों से वंचित रखा जाता है। यही कारण है कि शिक्षित नारियों में यह आंदोलन का केंद्र बनकर ज्वलंत समस्या बन गया जो नारी–विमर्श के रूप में दृष्टिगत हुआ। सन् 1960 पश्चिम में नारी–मुक्ति को लेकर नारी–विमर्श की गूंज उठी जो 21वीं सदी में स्त्री–विमर्श के रूप में चारों ओर फैल गयी। स्त्री–विमर्श से हिंदी नाट्य क्षेत्र भी अछूता ना रहा। स्वतंत्रता के पूर्व भारतेंदु हरिश्चंद्र ने स्त्री शिक्षा को महत्व देने के लिए 'बाला–बोधिनी' पत्रिका का प्रकाशन किया। नर–नारी समानता एवं नारी–मुक्ति का नारा देकर स्त्री–विमर्श को अपने नाटकों का प्रमुख विषय बनाया। जयशंकर प्रसाद जी ने अपने नाटकों में नारी को अपने अधिकारों के प्रति अधिक प्रोत्साहित किया। इसके पश्चात उपेन्द्रनाथ अश्क, लक्ष्मीनारायण लाल, जगदीश चंद्र माथुर, मोहन राकेश, शंकर शेष आदि नाटककारों ने भी स्त्री–विमर्श को अपने नाटकों का मुख्य विषय बनाकर स्त्री समस्याओं को उभारकर हिंदी नाट्य साहित्य में अपना विशेष योगदान दिया। समकालीन नाटककारों में पद्मश्री एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित श्री दयाप्रकाश सिन्हा जी ने अपने नाटकों में नारी जीवन की अनेक समस्याओं का यथार्थ चित्रण करके स्त्री–विमर्श को अपने नाटकों प्रमुख विषय बनाया। उन्होंने स्त्री–शिक्षा, नारी–शोषण, घरेलू हिंसा, अत्याचार, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा एवं आत्महत्या जैसी अनेक समस्याओं को अपने नाटकों में उभारकर लोगों का इस ओर ध्यान आकर्षित किया है जिससे लोगों के दृष्टिकोण में बदलाव आया है। स्त्री–विमर्श का अर्थ और अवधारणा :– स्त्री विमर्श दो शब्दों के योग से बना है– स्त्री विमर्श =स्त्री–विमर्श। स्त्री–शब्द का अर्थ नारी, मां, जननी, महिला, औरत एवं लड़की आदि। स्त्री लिंग के आधार पर नारी। स्त्री–विमर्श पर चर्चा करने से पहले 'विमर्श' शब्द का अर्थ जानना आवश्यक है। 'विमर्श' शब्द 'वि' उपसर्ग और 'मृष' धातु के सहयोग से बना है, जिसका अर्थ चर्चा, निरीक्षण, परीक्षण, विश्लेषण, विचार आदि। इसलिए स्त्री के विषय में किए जाने वाले विचार–विनिमय को स्त्री–विमर्श के रूप में जाना जाता है।

मुख्य शब्द :–

नारी शोषण, स्त्री–शिक्षाए, अपहरण, अजनबीपन और एकांकीपन, परिवार नियोजन।

स्त्री–विमर्श की परिभाषा :–

पश्चिम विद्वान इस्टेल फ्रेंडमेन के शब्दों में – "पुरुष एवं स्त्री सम महत्त्व रखते हैं। अधिकांश समाजों में पुरुष को वरीयता देते हैं। स्त्री–पुरुष समानता के लिए सामाजिक आंदोलन जरूरी है क्योंकि लिंगाधारित अंतर अन्य अंतः सामाजिक परंपराओं में प्रवेश करता है, जो यह निश्चित करता है कि यह चिंतन अन्याय के विरुद्ध है।" हिन्दी लेखिका प्रभा खेतान के मतानुसार – "नारी वादन मार्क्सवाद है और न पूंजीवाद। स्त्री हर जगह है, हर वाद में है, फैलाव में है, मगर संस्कृति के विस्तृत फलक पर आज भी वह वस्तुकरण की इस पारंपरिक प्रक्रिया को पुरुष दृ ष्टि से नहीं बल्कि स्त्री दृष्टि से देखने और समझने की जरूरत है।" उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि स्त्री–शोषण, उत्पीड़न सदियों से चली आ रहा है। यह कहानी नई नहीं है परंतु स्त्री–विमर्श पर हो रहे आंदोलनों के कारण नारी हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही है। जिसने जयशंकर प्रसाद जी के कथन

'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी' को गलत साबित कर दिया है और सबला नारी के रूप में परिवर्तित हो गयी है।

भारतीय संदर्भ में स्त्री–विमर्श :–

प्राचीन काल से लेकर आज तक नारीयों की स्थिति दयनीय एवं सोचनीय हैं। वेद, पुराण, महाकाव्य, उपनिषद्, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों में नारी को मां, देवी, शक्ति, माता, जननी, धात्री, जीवनदायिनी, जन्म दात्री आदि अनेक नामों से जाना जाता हैं। नारी को मां, बहन, पुत्री अर्थात् धरती पर सबसे पवित्रतम रूप माना गया है। ईश्वर से भी बढ़कर मां को पूजा जाता है क्योंकि भगवान की जन्मदात्री भी नारी ही रही है। रामायण ग्रंथ में श्रीराम जी ने 'मां' के महत्व को समझाते हुए कहा हैं–'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गदपि गरीयसी।' अर्थात जननी मां जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। तैत्तिरीय उपनिषद में'मातृ देवो भवः'कहकर मां को देवताओं से भी श्रेष्ठ माना है। प्राचीनकाल में स्त्री–पुरुष को एक दूसरे के पूरक माना जाता था। पुरुष के समान ही स्त्रियों को सभी क्षेत्रों में समान दर्जा दिया जाता था। स्त्री के बिना पुरुष और पुरुष के बिना स्त्री का अस्तित्व नहीं वत हैं। वैदिक युग में महिलाओं की स्थिति समाज में उच्च शिखर पर थी उन्हें स्वतंत्रता–समानता की पूर्ण अभिव्यक्ति थी। वह धार्मिक क्रिया–कांडों को संपन्न कराती थी इसलिए उन्हें पुरोहित एवं ऋषियों के समकक्ष ही दर्जा दिया जाता था। वैदिक युग में स्त्री शिक्षा को भी अधिक महत्व दिया जाता था। वही मौर्यकालीन समाज में स्त्रियों की स्थिति में कुछ गिरावट आयी क्योंकि बाबर, मुगलों, इस्लामी आक्रमणकारियों से बचने के लिए स्त्रियों को 'पर्दाप्रथा' का सहारा लेकर घर पर ही रहना पड़ता था जिससे पुरुष समाज ने नारी समाज को स्वतंत्रता और समानता के अधिकारों को सीमित कर दिया।

हिंदी साहित्य में स्त्री–विमर्श :–

हिंदी साहित्य में भी नारी के विविध रूप देखे जा सकते हैं। जयशंकर प्रसाद ने 'नारी तुम केवल श्रद्धाश कहकर नारी को श्रद्धा के रूप में, सुमित्रानंदन पंत ने 'देवि! मां! सहचरी प्राणा!' कहकर सहचरी के रूप में, निराला ने नारी सौंदर्य की प्रकृति को शक्ति के रूप में तो महादेवी वर्मा ने नारी को करुणा के रूप में रूपाहित किया है। पाश्चात्य कवि शेक्सपियर ने 'दुर्बलता तुम्हारा नाम ही नारी है' कहकर नारी अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। स्वातंत्र्योत्तर काल में उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान, ममता कालिया, मैत्रेयी पुष्पा जैसी मुख्य लेखिकाएं है जिन्होंने स्त्री–विमर्श से जुड़ी समस्याओं को उभारने का प्रयास किया है। मैत्रेयी पुष्पा के शब्दों में "नारीवाद ही स्त्री–विमर्श है,नारी की यथार्थ स्थिति के बारे में चर्चा करना ही स्त्री–विमर्श है।"

हिंदी नाटकों में स्त्री–विमर्श :–

जिस प्रकार काव्य उपन्यास और साहित्य में स्त्री–विमर्श अलग–अलग रूपों में व्याख्यातित्व किया है उसी प्रकार नाटक साहित्य में भी स्त्री–विमर्श के कई रूप देखने को मिलता हैं। हिंदी नाट्य साहित्य का उद्भव भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटकों से माना जाता है। उस समय समाज में नारी की स्थिति दयनीय थी, उसे हीन भावना से देखा जाता था। उनके मौलिक नाटक 'नीलदेवी' में नारी सशक्तिकरण को सर्वोत्तम रूप प्रकट किया गया है। भारतेंदु युग के नाटककार में राधाकृष्ण दास जी ने 'दुखिनबाला', प्रतापनारायण मिश्र का 'कलिकौतुक' बालकृष्ण भट्ट का 'जैसा काम वैसा परिणाम' आदि नाटककारों के नाटकों में नारी–शोषण को उभारने का प्रयास किया है। जयशंकर प्रसाद की 'ध्रूवस्वामिनी' नाटक में स्त्री को अपने अधिकारों के प्रति प्रेरित किया है। प्रसादोत्तर युग के नाटककारों में उपेंद्रनाथ अश्क जी ने 'स्वर्ग की झलक', 'अलग–अलग वैतरणी', 'कैद और उड़ान' आदि नाटकों में स्त्री पर पड़ने वाले कुप्रभाव को उजागर किया है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटककारों में लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक 'अंधा कुआं', 'मादाकैक्टस','गंगा माटी' आदि नाटकों में स्त्रियों का पुरुष द्वारा तिरस्कार के कारण उनके जीवन में होने वाले नवीन कार्य की स्थापना करके एक नया मोड़ देने का कार्य किया है। मोहन राकेश के'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस' और 'आधे–अधूरे' तीनों ही नाटक स्त्री–पुरुष संबंधों पर आधारित रहे हैं। इसके अतिरिक्त गिरिराज किशोर, जगदीश चंद्र माथुर आदि के नाटकों में स्त्री के प्रेमिका रूप को उभारा है। समकालीन हिंदी नाटककारों में सुरेंद्र वर्मा ने 'द्रौपदी' नाटक में मिथक का प्रयोग करके सुरेखा को द्रौपदी बनने पर विश्वास करता है। डॉ. शंकर शेष ने 'कोमल गांधार' नाटक में गांधारी के जीवन संघर्ष को बड़ी सहजता से प्रस्तुत किया है। दया प्रकाश सिन्हा जी ने अपने नाटकों में नारी–विमर्श पर विस्तार से लिखा है।

दयाप्रकाश सिन्हा जी के नाटकों में स्त्री विमर्श :–

पद्मश्री दयाप्रकाश सिन्हा जी हिन्दी नाट्य साहित्य में एक प्रतिभा संपन्न नाटककार, लेखक, अभिनेता, निर्देशक, इतिहासकार, साहित्यकार के रूप में

विद्यमान हैं। उन्होंने अपनी रचनाकर्म के अंतर्गत पिछले 65 वर्षों में 15 नाटक लिखकर हिंदी नाट्य साहित्य में अपना अमूल्य योगदान दिया है। सिन्हा जी ने सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, पौराणिक आदि विषयों को अपने नाटकों का विषय बनाकर समाज में व्याप्त समस्याओं को उजागर किया है। उन्होंने स्त्री–विमर्श को भी अपने नाटकों में स्थान दिया है। नारी–शिक्षा, दहेज प्रथा, आत्महत्या, अत्याचार, नारी शोषण आदि अनेक समस्याओं को अपने नाटकों का विषय बना कर आज के संदर्भ में प्रस्तुत किया है। दयाप्रकाश सिन्हा जी ने स्त्री–विमर्श के विभिन्न रूपों को व्याख्यातित किया है जो इस प्रकार है :– दहेज प्रथा और आत्महत्या :– 21वीं सदी में भी दहेजप्रथा एक ज्वलंत समस्या बनी हुई है जिसका भोग अधिकांशतौर पर महिलाएं एवं मध्यमवर्गीय परिवार बनाता है। आज भी समाज में लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को अधिक महत्व दिया जाता है। लड़कों को श्रेष्ठ और लड़कियों को निम्नतर समझा जाता है। 'सांझ–सवेरा' नाटक में शीतला प्रसाद अपनी एकमात्र बेटी शोभना के विवाह के लिए लड़के वालों की ओर से दहेज के रूप में 5000/– रूपयों की मांग की जाती है। शीतला प्रसाद जैसे–तैसे 5000/–रूपयों की व्यवस्था करते हैं परंतु रूपयों की चोरी हो जाने के कारण शोभना का विवाह रुक जाता है जिससे उसके माता–पिता चिंतित हो जाते हैं। दहेज के बिना शोभना का विवाह होना असंभव हो जाता है परंतु बाबूजी लड़के वालों से 2 महीनों की मोहलत मांगते हैं। दो महीने बीत जाने पर भी पैसों का इंतजाम नहीं हो पाता क्योंकि शीतला प्रसाद को कहीं से भी कोई सहायता प्राप्त नहीं होती। दहेज के रूप में पैसों की व्यवस्था न होने के कारण शोभना विवाह टूट जाता है जिससे वह चिंतित रहती है, रोती भी है परंतु शोभना के मन पर विवाह टूटने का आघात लगने के कारण वह जहर की पुड़िया पानी में मिलाकर आत्महत्या करने पर विवश हो जाती है परंतु मां द्वारा उसे बचा लिया जाता है।

स्त्री–शिक्षा :–

दयाप्रकाश सिन्हा जी ने अपने नाटकों में स्त्री–शिक्षा को अधिक महत्व दिया है। 'सांझ–सवेरा' नाटक में नायक निखिल के माध्यम से अपनी बहन शोभना के विवाह में दहेज ना देने और शिक्षा का महत्व समझाता है। निखिल के मतानुसार लड़की को पढ़ा–लिखा कर इस योग्य बनाना चाहिए कि वह अपने पैरों पर खड़ी हो सके और विवाह के रूप में दहेज का सहारा ना लेना पड़े। वही 'इतिहास–चक्र' नाटक में बाबू की पत्नी रिश्वत खोरी के पैसों से जीवन जीने की अपेक्षा घर छोड़ना ज्यादा पसंद करती है क्योंकि वह पढ़ी–लिखी है और शिक्षा के बल पर वह नौकरी करके अपना जीवन–यापन अच्छी तरह कर सकती है। 'सादर आपका', 'मन के भंवर' जैसे नाटकों में भी सिन्हा जी ने स्त्री–शिक्षा पर विशेष बल दिया है।

नारी शोषण :–

दयाप्रकाश सिन्हा जी ने नारी–शोषण जैसी दयनीय दशा का मार्मिक वर्णन भी विस्तार पूर्वक किया है। 'मन के भंवर' नाटक में डॉक्टर वशिष्ठ की पत्नी छाया का परपुरुष के साथ संबंध होने की वजह से वह उसके साथ भाग जाती है जिसके कारण डॉक्टर वशिष्ठ छाया को कभी माफ नहीं कर पाते परंतु छाया के द्वारा अपनी गलती स्वीकार करने के पश्चात भी पढ़ें–लिखे शिक्षित मनोचिकित्सक डॉ. वशिष्ठ अंत तक उसे स्वीकार नहीं करते यहां तक की छाया की मृत्यु का समाचार प्राप्त होने पर भी वह उसके समक्ष नहीं जाते और उसकी लाश को लावारिस घोषित कर देते है। 'सम्राट अशोक' नाटक में अशोक के द्वारा नारी पर किए गए अत्याचारों पर भी सिन्हा जी ने विस्तार से वर्णन किया है।

अपहरण और वैश्यावृत्ति :–

आज 21वीं सदी में अपहरण जैसी विकट समस्या का भोग स्त्रीयां बन रही है। वह अपने आपको कहीं भी सुरक्षित नहीं समझती इसका कारण है अपहरण। सिन्हा जी ने अपने नाटक 'सीढियां' में इस समस्या की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। नाटक का नायक सलीम उच्च पद पर आसीन होने के लिए अपनी मंगेतर बानौ का अपहरण करके उसे सिपाही के समक्ष उपभोग की वस्तु समझकर उसे पेश करता है। इस प्रकार सलीम अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए अपनी मंगेतर की बली चढ़ाने से भी पीछे नहीं हटता। यही कारण है कि आज नारी कहीं भी सुरक्षित नहीं है। अपहरण जैसी गंभीर समस्या के कारण वेश्यावृत्ति का भी जन्म होता है। 'सीढ़ियां' नाटक में सिपाही की बहन का अपहरण करके शासन के कुछ अधिकारी उसकी बहन की इज्जत लूट कर उसे वेश्यावृत्ति के कीचड़ में ढकेल देते हैं।

अजनबीपन और एकांकीपन :–

दयाप्रकाश सिन्हा जी ने 'सादर आपका' नाटक में अजनबीपन और एकांकीपन का यथार्थ चित्रण किया है। ब्रह्मानंद, लज्जावती और उनकी बेटी रेखा तीनों एक ही घर ओर एक ही छत के नीचे रहकर

अजनबियों की भांति जीवनयापन कर रहे हैं। ब्रह्मानंद की पत्नी लज्जावती अपनी और अपने पति की पदौन्नति के लिए कोई भी कार्य यहां तक की परपुरुष से संबंध बनाने के लिए भी तैयार रहती है। जिसके कारण ब्रह्मानंद अपनी पत्नी लज्जावती का हर स्तर पर उपेक्षा करते हैं जिससे वह अपनी ही घर में अजनबीपन का अनुभव करती है।

वह इस अजनबीपन के कारण एकांकीपन का भी शिकार हो जाती है और इस एकांकीपन को दूर करने के लिए वह कभी ब्रह्मानंद के मित्र गोपाल कृष्ण तो कभी रेखा के मित्र धनेश का सहारा लेती हैं। इतना ही नहीं वह अपनी बेटी के प्रेमी रोहित को भी अपना शिकार बनाती है।

परिवार नियोजन :–

आज वर्तमान युग में परिवार नियोजन एक विकट समस्या बनकर हमारे समक्ष खड़ी है। भारत में दिन–प्रतिदिन जनसंख्या वृद्धि बढ़ती ही जा रही है जिसके कारण भारत में जनसंख्या विस्फोट का भय सता रहा है। दयाप्रकाश सिन्हा जी ने 'दुश्मन' नाटक में परिवार नियोजन पर चिंता जताई है। हिकमत सिंह अपने दुश्मन को हराने की चक्कर में आधा दर्जन बच्चे पैदा कर देता है जिसके कारण उसकी पत्नी लीला की स्थिति खराब हो जाता है। उनके घर की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण ना तो वे अपने बच्चों का भरण–पोषण कर पाते हैं और ना ही उन्हें अच्छी शिक्षा दे पाते हैं। दयाप्रकाश सिन्हा जी ने छोटा परिवार सुखी परिवार की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि दयाप्रकाश सिन्हा जी ने अपने नाटकों के माध्यम से स्त्री–विमर्श जैसी विकट समस्या को उभारने का प्रयास किया है जिसमें उन्हें सफलता भी प्राप्त हुई है क्योंकि उन्होंने समाज में व्याप्त समस्याओं को स्वयं देखा अनुभव किया और उसका सूक्ष्म विश्लेषण करके उन्हें नाटक के माध्यम से हमारे समक्ष उजागर किया है जोकि पाठकवर्ग को सहृदय से जोड़ता है। आज समाज में दहेज प्रथा, स्त्री शिक्षा, अपहरण, एकांकीपन, अजनबीपन आदि समस्याओं के कारण स्त्रियों की दशा में गिरावट आई है जिससे उनका विकास रुक गया है। परंतु दयाप्रकाश सिन्हा जी ने इन समस्याओं को नाटक के माध्यम से हमारे समक्ष उजागर करके नारी के प्रति सम्मान और गौरव प्रकट किया हैं। साथ ही साथ उनकी स्वतंत्रता और समानता को भी प्रमुखता दी है।

संदर्भ सूची :–

1. https://hindi.feminisminindia.com
2. https://www.mpgkpdf.com
3. https://egyankosh.ac.in
4. https://drnarayanaraju:blogspot.com
5. डॉ. अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की पारिभाषित शब्दावली।
6. रवीन्द्रनाथ बहोरे, नाटककार दयाप्रकाश सिन्हा समीक्षायन।
7. दयाप्रकाश सिन्हा, नाट्य समग्र–1, 2, 3
8. इन्टरनेट।
9. डॉ. अमरनाथ, हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, पृष्ठ 546